Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना : एक आलोचनात्मक अध्ययन

मनोहर दान*

* ई-96, सेक्टर 12, सिद्धार्थ नगर, मालवीय नगर, जयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – आधुनिक हिंदी साहित्य में रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रीय चेतना के सर्वाधिक सशक्त कवियों में परिगणित किए जाते हैं। उन्होंने ऐसे समय में साहित्य सृजन किया जब भारतीय समाज औपनिवेशिक शासन, सांस्कृतिक संक्रमण, सामाजिक विषमता तथा राजनीतिक संघर्षों से गुजर रहा था। दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा तथा विश्वबंधुत्व की व्यापक भावना समाहित है। प्रस्तुत शोध आलेख में दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय चेतना के विविध आयामों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। विशेष रूप सेरेणुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथीतथापरशुराम की प्रतीक्षाजैसी कृतियों के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना भारतीय समाज के सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा नैतिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है।

शब्द कुंजी – राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक न्याय, दिनकर, आधुनिक हिंदी कविता, स्वतंत्रता आंदोलन।

प्रस्तावना – साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ माना गया है। साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं होता, बल्कि वह समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों और ऐतिहासिक अनुभवों का संवाहक भी होता है। किसी राष्ट्र की राजनीतिक परिस्थितियाँ, सामाजिक संरचनाएँ तथा सांस्कृतिक मान्यताएँ उसके साहित्य में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अभिव्यक्त होती हैं। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में राष्ट्रीय चेतना का विकास विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से भारत में राष्ट्रीय पुनर्जागरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। विदेशी शासन के दमन, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक हीनता की भावना ने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया। इस परिस्थिति में साहित्यकारों ने जनता में राष्ट्रीय भावना जागृत करने का दायित्व निभाया। भारतेंदु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलालचतुर्वेदी तथा सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कवियों ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी परंपरा को रामधारी सिंह दिनकर ने नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

दिनकर का साहित्य भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ। उनकी कविताओं में संघर्ष, स्वाभिमान, क्रांति और सांस्कृतिक गौरव के स्वर अत्यंत मुखर हैं। उन्होंने राष्ट्र को केवल राजनीतिक सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई के रूप में देखा। उनकी राष्ट्रीयता में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी आस्था, सामाजिक विषमताओं के प्रति असंतोष तथा मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई देती है।

राष्ट्रीय चेतना : अवधारणा एवं स्वरूप – राष्ट्रीय चेतना आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सामान्यत: इसका अर्थ किसी राष्ट्र के प्रति प्रेम, निष्ठा और समर्पण की भावना से लगाया जाता है, किंतु इसका वास्तविक स्वरूप इससे कहीं अधिक व्यापक है। राष्ट्रीय चेतना में साझा इतिहास, सांस्कृतिक परंपराएँ, भाषा, सामाजिक मूल्य तथा सामूहिक आकांक्षाएँ सम्मिलित होती हैं।[1]

भारतीय राष्ट्रीयता की विशेषता यह है कि इसका आधार केवल राजनीतिक एकता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता भी है। भारत विभिन्न भाषाओं, धर्मों और जातीय समूहों का देश है, फिर भी उसकी सांस्कृतिक आत्मा सदियों से एक रही है। इसी सांस्कृतिक एकता ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं:

1. **सांस्कृतिक आयाम –** सांस्कृतिक राष्ट्रीयता किसी राष्ट्र की परंपराओं, भाषाओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक उपलब्धियों के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करती है। दिनकर भारतीय संस्कृति को मानव सभ्यता की महत्वपूर्ण धरोहर मानते हैं।
2. **राजनीतिक आयाम –** राजनीतिक राष्ट्रीयता का संबंध स्वतंत्रता, स्वशासन और लोकतांत्रिक मूल्यों से है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान यह चेतना अत्यंत प्रबल रूप में विकसित हुई।
3. **सामाजिक आयाम –** राष्ट्रीय चेतना तभी सार्थक मानी जा सकती है जब समाज में समानता, न्याय और बंधुत्व की स्थापना हो। दिनकर सामाजिक विषमताओं को राष्ट्रीय एकता के लिए बाधक मानते हैं।
4. **मानवीय आयाम –** दिनकर की राष्ट्रीयता अंतत: मानवता की व्यापक भावना में परिणत होती है। वे संकीर्ण राष्ट्रवाद के समर्थक नहीं हैं।[2]

रामधारी सिंह दिनकर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं युगीन पृष्ठभूमि– रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में हुआ। उनका बचपन आर्थिक कठिनाइयों में बीता, किंतु उन्होंने स्वाध्याय और परिश्रम के बल पर व्यापक ज्ञान अर्जित किया।

इतिहास, दर्शन, राजनीति और भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन उनके व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण विशेषता थी।

दिनकर ऐसे समय में साहित्य क्षेत्र में आए जब भारत स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहा था। देश में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसी घटनाएँ राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित कर रही थीं। इन परिस्थितियों का प्रभाव दिनकर के काव्य पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

उनकी प्रमुख कृतियों मेंरेणुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षातथासंस्कृति के चार अध्यायविशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्हेंउर्वशीके लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

दिनकर की काव्य प्रतिभा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उनकी ओजस्वी अभिव्यक्ति है। उनकी कविताएँ केवल भावनात्मक आवेग की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि उनमें गहन वैचारिकता भी विद्यमान है। उन्होंने कविता को समाज परिवर्तन का प्रभावी माध्यम माना।[3]

रेणुका में राष्ट्रीय चेतना– दिनकर की प्रारंभिक काव्य कृतियों में रेणुका का विशेष महत्व है। इस संग्रह का प्रकाशन ऐसे समय में हुआ जब भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन नई गति प्राप्त कर रहा था।रेणुकामें राष्ट्रीय चेतना अपने प्रारंभिक किंतु प्रभावशाली रूप में दिखाई देती है।

इस संग्रह में कवि ने भारत के गौरवशाली अतीत का स्मरण करते हुए वर्तमान पीढ़ी को प्रेरणा देने का प्रयास किया है। दिनकर का विश्वास था कि कोई भी राष्ट्र अपने इतिहास से कटकर प्रगति नहीं कर सकता। इसलिए वे भारतीय संस्कृति और परंपरा की उपलब्धियों को राष्ट्रीय आत्मविश्वास का आधार मानते हैं।

रेणुका में मातृभूमि के प्रति गहरा प्रेम व्यक्त हुआ है। कवि के लिए राष्ट्र केवल भूभाग नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक सत्ता है। विदेशी शासन के कारण भारतीय समाज में जो हीन भावना उत्पन्न हुई थी, दिनकर उसे दूर करना चाहते हैं। वे जनता में आत्मसम्मान और स्वाधीनता की चेतना जागृत करने का प्रयास करते हैं।[4]

हुंकार में राष्ट्रीय चेतना– यदि रेणुका राष्ट्रीय भावना की कोमल अभिव्यक्ति है, तोहुंकार उसका प्रखर और ऊर्जस्वित स्वरूप है। इस कृति में कवि अन्याय, दमन और पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान करता है।

हुंकार का मूल स्वर विद्रोह है। किंतु यह विद्रोह विनाशकारी नहीं, बल्कि रचनात्मक है। दिनकर मानते हैं कि जब समाज में अन्याय बढ़ जाए और शोषण असहनीय हो जाए, तब उसके विरुद्ध संघर्ष करना आवश्यक हो जाता है।

इस संग्रह में युवाओं को विशेष रूप से संबोधित किया गया है। कवि उन्हें राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति मानता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना कर्मशीलता, साहस और त्याग की भावना से प्रेरित है।[5]

कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना– दिनकर के काव्य साहित्य में कुरुक्षेत्र एक ऐसी कृति है जिसमें राष्ट्रीय चेतना अपने परिपक्व, दार्शनिक तथा मानवीय स्वरूप में अभिव्यक्त हुई है। यह काव्यमहाभारतके युद्धोत्तर प्रसंग पर आधारित होते हुए भी केवल पौराणिक आख्यान का पुनर्पाठ नहीं है, बल्कि आधुनिक विश्व की राजनीतिक और नैतिक समस्याओं का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् संपूर्ण विश्व हिंसा, साम्राज्यवाद और विनाशकारी प्रवृत्तियों से जूझ रहा था। ऐसी परिस्थितियों में दिनकर ने महाभारत के प्रसंगों को आधुनिक संदर्भों से जोड़ते हुए युद्ध और शांति के प्रश्नों पर पुनर्विचार किया।

दिनकर युद्ध को स्वभावत: अनिष्टकारी मानते हैं, किंतु वे यह भी स्वीकार करते हैं कि जब अन्याय, अत्याचार और शोषण अपनी सीमा का अतिक्रमण कर जाते हैं, तब उनके प्रतिरोध के लिए संघर्ष आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि न्याय, समता और मानवीय गरिमा की स्थापना का माध्यम बन जाती है।

दिनकर की दृष्टि में राष्ट्रीयता का अंतिम लक्ष्य मानव कल्याण है। वे किसी भी प्रकार के उग्र और संकीर्ण राष्ट्रवाद के विरोधी हैं। उनकी राष्ट्रीय चेतना विश्वबंधुत्व और सहअस्तित्व की भावना से प्रेरित है। यही कारण है कि कुरुक्षेत्र में युद्ध की विभीषिका के साथ-साथ शांति की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है।

दिनकर के अनुसार शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि वह सामाजिक न्याय और मानवीय समानता पर आधारित व्यवस्था का परिणाम है। यदि समाज में आर्थिक विषमता, शोषण और अन्याय विद्यमान रहेंगे तो स्थायी शांति की स्थापना संभव नहीं हो सकती। इस दृष्टि से कुरुक्षेत्र दिनकर की राष्ट्रीय चेतना का सर्वाधिक विकसित रूप प्रस्तुत करता है।[6]

रश्मिरथी में राष्ट्रीय चेतना– रश्मिरथी दिनकर की सर्वाधिक लोकप्रिय कृतियों में से एक है। इस प्रबंध काव्य का केंद्रीय पात्र महाभारत का महायोद्धा कर्ण है। दिनकर ने कर्ण के माध्यम से सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और राष्ट्रीय समरसता के आदर्शों को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

यद्यपि रश्मिरथी प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय काव्य नहीं है, तथापि इसकी मूल संवेदना राष्ट्रीय चेतना से गहरे रूप में जुड़ी हुई है। दिनकर ने कर्ण के चरित्र को ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जो जन्मना निम्न समझे जाने के कारण निरंतर अपमान और उपेक्षा का सामना करता है, किंतु अपनी प्रतिभा, परिश्रम और आत्मबल के माध्यम से महानता प्राप्त करता है।

कर्ण का संघर्ष भारतीय समाज में विद्यमान जातीय और सामाजिक विषमताओं का प्रतीक बन जाता है। दिनकर इस चरित्र के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब उसके प्रत्येक नागरिक को समान अवसर और सम्मान प्राप्त हो। सामाजिक अन्याय राष्ट्रीय एकता को कमजोर करता है और राष्ट्र की सामूहिक शक्ति को क्षीण करता है। रश्मिरथीमें कर्ण की कर्तव्यनिष्ठा, मित्रता और आत्मसम्मान की भावना भी राष्ट्रीय चेतना के महत्वपूर्ण पक्षों को उद्घाटित करती है। दिनकर यह स्थापित करना चाहते हैं कि राष्ट्रनिर्माण के लिए व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन आवश्यक है।

हालाँकि कुछ आलोचकों ने यह मत व्यक्त किया है कि कर्ण की दुर्योधन के प्रति अत्यधिक निष्ठा नैतिक दृष्टि से प्रश्नांकित है, किंतु दिनकर ने उसके व्यक्तित्व को मानवीय जटिलताओं के साथ प्रस्तुत किया है। यही कारण है किरश्मिरथीसामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण कृति बन जाती है।[7]

परशुराम की प्रतीक्षामें राष्ट्रीय चेतना– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज जिन चुनौतियों से जूझ रहा था, उनका प्रभाव दिनकर की उत्तरवर्ती रचनाओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।परशुराम की प्रतीक्षा इसी संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है।

इस रचना में परशुराम केवल पौराणिक चरित्र नहीं हैं, बल्कि वे अन्याय,

भ्रष्टाचार और नैतिक पतन के विरुद्ध संघर्ष करने वाली परिवर्तनकारी शक्ति के प्रतीक हैं। दिनकर स्वतंत्र भारत की परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं दिखाई देते। वे अनुभव करते हैं कि राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त होने के बावजूद समाज में आर्थिक विषमता, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, नैतिक पतन तथा सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं।

दिनकर की दृष्टि में स्वतंत्रता केवल शासन परिवर्तन का नाम नहीं है। उसका वास्तविक उद्देश्य सामाजिक और नैतिक पुनर्निर्माण होना चाहिए। यदि स्वतंत्रता के पश्चात भी समाज में अन्याय और शोषण बना रहे, तो स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ अधूरा रह जाता है।

इस कृति में कवि ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता अनुभव करता है जो राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर रखकर समाज को नई दिशा प्रदान कर सके। इस प्रकारपरशुराम की प्रतीक्षास्वतंत्र भारत के संदर्भ में राष्ट्रीय चेतना का आत्मालोचनात्मक स्वर प्रस्तुत करती है।[8]

दिनकर की राष्ट्रीय चेतना : एक आलोचनात्मक मूल्यांकन– रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय चेतना बहुआयामी और व्यापक है। उसमें सांस्कृतिक गौरव, राजनीतिक स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, मानवीय संवेदना तथा विश्वबंधुत्व की भावनाओं का समन्वय दिखाई देता है।

उनकी राष्ट्रीयता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसका सांस्कृतिक आधार है। दिनकर भारतीय संस्कृति को राष्ट्र की आत्मा मानते हैं। वे भारतीय सभ्यता की समन्वयवादी परंपरा, आध्यात्मिक दृष्टि तथा मानवीय मूल्यों को राष्ट्रीय जीवन का आधार स्वीकार करते हैं।[8]

दिनकर की राष्ट्रीय चेतना संघर्षशील भी है। वे अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध को राष्ट्रीय कर्तव्य मानते हैं।हुंकारऔर रेणुका में यह स्वर अत्यंत प्रबल रूप में उपस्थित है।

इसके साथ ही उनकी राष्ट्रीयता सामाजिक चेतना से भी अनुप्राणित है। वे जातीय भेदभाव, आर्थिक असमानता और सामाजिक अन्याय को राष्ट्र की प्रगति के लिए घातक मानते हैं।रश्मिरथी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

दिनकर की राष्ट्रीयता का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष उसका मानवतावादी स्वरूप है। वे संकीर्ण राष्ट्रवाद के विरोधी हैं। उनकी दृष्टि में राष्ट्रप्रेम का अंतिम उद्देश्य समस्त मानवता के कल्याण में निहित होना चाहिए।[9]

फिर भी उनकी राष्ट्रीय चेतना की कुछ सीमाएँ भी दृष्टिगत होती हैं। कुछ आलोचकों का मत है कि उनकी प्रारंभिक कविताओं में भावनात्मक आवेग अपेक्षाकृत अधिक है और वैचारिक संतुलन कुछ स्थानों पर कम दिखाई देता है। कुछ विद्वानों ने यह भी संकेत किया है कि दिनकर का सांस्कृतिक दृष्टिकोण कभी-कभी अतीत के गौरव पर अत्यधिक केंद्रित प्रतीत होता है। तथापि इन सीमाओं के बावजूद उनकी राष्ट्रीय चेतना का महत्व कम नहीं होता।[10]

दिनकर की राष्ट्रीय चेतना पर आलोचकों की दृष्टि– रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय चेतना का मूल्यांकन हिंदी आलोचना जगत में विविध दृष्टिकोणों से किया गया है। हिंदी साहित्य के प्रख्यात विद्वान डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है कि भारतीय साहित्य की मूल चेतना सदैव लोकमंगल, सांस्कृतिक समन्वय और मानवीय संवेदनाओं से अनुप्राणित रही है। इसी परंपरा के आधुनिक प्रतिनिधि कवि के रूप में दिनकर भारतीय सांस्कृतिक चेतना के पुनरुत्थान का कार्य करते हैं।[11]

डॉ. बच्चन सिंह के अनुसार आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीयता का स्वर केवल राजनीतिक प्रतिरोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता तथा सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता के प्रश्नों को भी समाहित किया। दिनकर के काव्य में यह प्रवृत्ति अत्यंत सशक्त रूप में दिखाई देती है।[12]

डॉ. शिवकुमार मिश्र ने दिनकर को भारतीय जनमानस का कवि माना है। उनके अनुसार दिनकर की राष्ट्रीयता किसी विशेष वर्ग अथवा समुदाय की राष्ट्रीयता नहीं है, बल्कि वह समग्र भारतीय समाज की आकांक्षाओं और संघर्षों की प्रतिनिधि है। दिनकर ने अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्र को एक जीवंत सांस्कृतिक सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया।[13]

डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का मत है कि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना का विकास भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की परिस्थितियों में हुआ, किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी उसमें परिवर्तनशीलता बनी रही। उनकी उत्तरवर्ती रचनाओं में राष्ट्रीयता का स्वर अधिक आत्मविश्लेषणात्मक और यथार्थवादी हो जाता है।[14]

डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त ने हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय भावना के विकास की चर्चा करते हुए दिनकर को मैथिलीशरण गुप्त के पश्चात राष्ट्रीय काव्यधारा का सबसे प्रभावशाली कवि माना है। उनके अनुसार दिनकर ने वीर रस की परंपरा को आधुनिक सामाजिक संदर्भों से जोड़कर राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा प्रदान की।[15]

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी का मानना है कि दिनकर के साहित्य में राष्ट्रीयता का आधार सांस्कृतिक स्मृति और ऐतिहासिक चेतना है। वे अतीत के गौरव का स्मरण केवल भावनात्मक कारणों से नहीं करते, बल्कि उसे वर्तमान समाज के नैतिक पुनर्निर्माण का साधन मानते हैं।[16]

डॉ. नगेन्द्र ने दिनकर के काव्य को ओज, विचार और संवेदना का अद्भुत समन्वय बताया है। उनके अनुसार दिनकर की कविताएँ पाठक के भीतर केवल भावनात्मक उत्तेजना उत्पन्न नहीं करतीं, बल्कि उसे सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति भी सजग बनाती हैं।[17]

डॉ. विजयेन्द्र स्नातक ने दिनकर के राष्ट्रीय चिंतन को भारतीय परंपरा और आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों के मध्य सेतु की संज्ञा दी है। वे मानते हैं कि दिनकर की राष्ट्रीयता सांस्कृतिक अस्मिता के साथ-साथ लोकतांत्रिक समानता और मानवीय स्वतंत्रता का भी समर्थन करती है।[18]

डॉ. सत्यकाम वर्मा ने विशेष रूप से दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला है कि दिनकर का राष्ट्रवाद संकीर्ण राजनीतिक राष्ट्रवाद न होकर सांस्कृतिक और मानवीय राष्ट्रवाद है। उनके काव्य में राष्ट्र की अवधारणा व्यक्ति, समाज और विश्वमानवता के मध्य समन्वय स्थापित करती है।[19]

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार भारतीय संस्कृति की वास्तविक शक्ति उसकी समन्वयकारी प्रवृत्ति में निहित है। दिनकर इसी सांस्कृतिक परंपरा के कवि हैं, जिन्होंने राष्ट्रीयता को सामाजिक न्याय और जनहित से जोड़कर उसकी व्याख्या की है।[20]

उपसंहार – निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि रामधारी सिंह दिनकर आधुनिक हिंदी कविता के ऐसे प्रतिनिधि कवि हैं जिन्होंने राष्ट्रीय चेतना को व्यापक वैचारिक आधार प्रदान किया। उनकी राष्ट्रीयता में स्वतंत्रता, स्वाभिमान, सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक न्याय तथा मानवीय मूल्यों का समन्वय दिखाई देता है।

रेणुका और हुंकार में स्वतंत्रता आंदोलन की ऊर्जा और क्रांतिकारी चेतना व्यक्त हुई है।कुरुक्षेत्र में राष्ट्रीयता का दार्शनिक और मानवतावादी स्वरूप उभरता है।रश्मिरथी सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा के प्रश्नों को राष्ट्रीय संदर्भों से जोड़ती है, जबकि परशुराम की प्रतीक्षा स्वतंत्र भारत की समस्याओं पर गंभीर चिंतन प्रस्तुत करती है।

इस प्रकार दिनकर की राष्ट्रीय चेतना किसी संकीर्ण राजनीतिक विचारधारा की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि वह भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा विश्वमानवता की भावना से अनुप्राणित एक व्यापक राष्ट्रीय दर्शन का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान समय में भी जब भारतीय समाज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, दिनकर का काव्य हमें राष्ट्रीय जीवन के मूल्यों पर पुनर्विचार करने की प्रेरणा प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2015, पृ. 482।
2. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2018, पृ. 15।
3. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2011, पृ. 87।
4. रामधारी सिंह दिनकर, रेणुका, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 11।
5. रामधारी सिंह दिनकर, हुंकार, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2016, पृ. 19।
6. रामधारी सिंह दिनकर, कुरुक्षेत्र, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2017, पृ. 32।
7. रामधारी सिंह दिनकर, रश्मिरथी, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2019, पृ. 58।
8. रामधारी सिंह दिनकर, परशुराम की प्रतीक्षा, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2018, पृ. 41।
9. रामविलास शर्मा, भारतीय साहित्य और राष्ट्रीय चेतना, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2008, पृ. 154।
10. सीतारामचतुर्वेदी, दिनकर और उनका साहित्य, वाराणसी : हिंदी प्रचारक संस्थान, 1998, पृ. 208।
11. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2010, पृ. 271।
12. डॉ. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2009, पृ. 119।
13. डॉ. शिवकुमार मिश्र, दिनकर : व्यक्तित्व और कृतित्व, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2005, पृ. 131।
14. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, आधुनिक हिंदी साहित्य, प्रयागराज : हिंदी परिषद प्रकाशन, 2014, पृ. 326।
15. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2013, पृ. 412।
16. डॉ. रामस्व रूपचतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2011, पृ. 289।
17. डॉ. नगेन्द्र, विचार और विवेचन, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2007, पृ. 94।
18. डॉ. विजयेन्द्र स्नातक, रामधारी सिंह दिनकर, नई दिल्ली रू साहित्य अकादमी, 2003, पृ. 78।
19. डॉ. सत्यकाम वर्मा, दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना, कानपुर : विकास प्रकाशन, 2015, पृ. 165।
20. डॉ. रामविलास शर्मा, भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2009, पृ. 214।

****